POLITICAL SCIENCE Dep.
BA-I (Hons.), Paper-I

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur

लोककल्याणकारी राज्य

लोककल्याणकारी राज्य का तात्पर्य एक ऐसे राज्य से होता है जिसके अंतर्गत शासन की शक्ति का प्रयोग सम्पूर्ण जनता के कल्याण के लिए होता है। 18वीं 19वीं सदी में टामस पेन, थामस जेफरसन, काण्ट, ग्रीन आदि के विचारों में लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा को देखा जा सकता है।

काण्ट के अनुसार "लोककल्याणकारी राज्य वह है जो अपने नागरिकों के लिए व्यापक समाज सेवाओं की व्यवस्था करता है। इन समाज-सेवाओं के अनेक रूप होते हैं। इसके अंतर्गत शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार और वृद्धावस्था में पेंशन आदि की व्यवस्था होती है। इनका मुख्य उद्देश्य नागरिकों को सभी प्रकार की सुरक्षा प्रदान करना होता है।"

इसप्रकार, लोककल्याणकारी राज्य का अर्थ राज्य के कार्यक्षेत्र का विस्तार है। राज्य के कार्यक्षेत्र के विस्तार का अर्थ प्रायः व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बन्धन से लिया जाता है लेकिन लोककल्याणकारी राज्य का अर्थ राज्य के कार्यक्षेत्र का इसप्रकार विस्तार करना होता है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर कोई विशेष बंधन न लगे। राज्य के कार्यक्षेत्र के साथ-साथ व्यक्ति का भी अपना स्वतंत्र कार्यक्षेत्र हो।

Scanned with CamScanner